जैव उर्वरक संबंधी कार्यदल के गठन के लिए पृष्ठभूमि नोट

वित्त मंत्री ने 2020 के अपने बजट भाषण में घोषणा की कि सरकार "पारंपरिक जैविक और अन्य नवीन उर्वरकों सहित सभी प्रकार के उर्वरकों के संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित करेगी।" यह उर्वरक के कुशल उपयोग, मिट्टी की उर्वरता और कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए आवश्यक है।

किसानों की आय बढ़ाने और हमारी आबादी को सुरक्षित और पौष्टिक भोजन आपूर्ति के लिए सतत कृषि प्राप्त करने के उद्देश्य से पिछले कुछ वर्षों में कृषि के लिए अनेक उपायों के साथ सहायता प्रदान की गई। इस संबंध में, फार्म में उत्पादित जैव अपशिष्ट और बायोमास कृषि आय के साथ पूरक आय प्रदान करने और सतत कृषि सुनिश्चित करने का अवसर प्रस्तुत करता है। जैव-उर्वरक और अन्य उप-उत्पादों के रूप में अपशिष्ट का इष्टतम उपयोग करना दूरगामी लाभकारी कदम है। यह मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड के कम उत्सर्जन के साथ पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों को कम करने में भी मदद कर सकता है| तीसरा; यह राज्य के खजाने पर बोझ को कम करने में मदद करता है जिससे सब्सिडी और अजैविक उर्वरकों के आयात पर खर्च किया गया राजस्व व्यय कम होता है |

अवसर

विश्व में भारत मवेशियों की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। 20वीं पशुधन गणना के अनुसार, देश में पशुधन की कुल आबादी 535.78 मिलियन होने का अनुमान है, जिसमें लगभग 302.79 मिलियन गोजातीय आबादी शामिल है। किसान कल्याण का मुख्य केंद्र पशुधन क्षेत्र है। भारत के किसान न केवल अपनी पूरक आय के लिए पशुधन पर निर्भर हैं, बल्कि यह कीमतों में उतार-चढ़ाव और मौसम की अनिश्चितताओं के खिलाफ एक बीमा के रूप में भी कार्य करता है। आर्थिक समीक्षा 2020-21 के अनुसार, 2014-15-2018-19 की अवधि के दौरान पशुधन क्षेत्र 8.24 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ा। दुग्ध उत्पादन में लगातार उच्च वृद्धि के परिणामस्वरूप हमारा देश विश्व में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है। इसके आगे के विकास हेतु आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए, सरकार द्वारा कई पहल और उपाय किए गए हैं। पशुधन पर इस तरह के महत्व और जोर के साथ, जैव अपशिष्ट को जैव उर्वरकों में परिवर्तित करके एक कुशल और टिकाऊ तरीके से कृषि के विविधीकरण को पूरक बनाना बुद्धिमता भरा कार्य है। उल्लेखनीय रूप से, पशुधन और अन्य कृषि उत्पादों से उत्पन्न जैव अपशिष्ट केवल जैव-उर्वरक तक ही सीमित नहीं है। पशुधन अपशिष्ट का संभावित उपयोग प्रभावी खाद / जैविक

उर्वरक, बायोगैस तैयार करने, पेंट उद्योग जैसे कई क्षेत्रों में हो सकता है। नीचे दिए गए चित्र में जैव अपशिष्ट के उपयोग से कुछ अवसरों की रूपरेखा तैयार की गई है

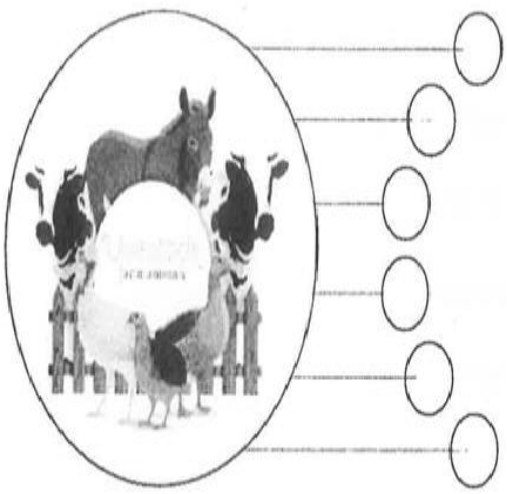

पर्यावरण के अनुकूल पेंट

अगरबत्ती और सौंदर्य प्रसाधन

आवारा मवेशियों की समस्या का समाधान

बायोगैस खाना पकाने का स्वच्छ ईंधन और बिजली

जैव उर्वरक (ठोस) एवं (तरल)

पर्यावरण के अनुकूल जैव कीटनाशक

जहां भारतीय किसानों को बेहतर फसल उत्पादकता की दृष्टि से रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से लाभ हुआ है, वहीं अंततः रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से महत्वपूर्ण आर्थिक एवं पर्यावरणीय कीमतें चुकानी पड़ती हैं। इसके अलावा अजैविक उर्वरक पर आयात निर्भरता अधिक है और बढ़ रही है।

पशुधन की अर्थव्यवस्था एवं मवेशियों का मुद्दा:

भारत में किसान गाय और भैंस जैसे अनुत्पादक पशुधन को छोड़ रहे हैं, क्योंकि वे अब उन्हें खिलाने और रखने का खर्च नहीं उठा सकते। इससे समस्या उत्पन्न हो रही है एवं इससे भारत की पशुधन अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रहा है और देश के किसानों के सामने संकट की स्थिति आ रही है। आवारा मवेशियों द्वारा खड़ी फसलों को नष्ट किए जाने से किसानों को धन का नुकसान हो रहा है। इसके अलावा, मवेशियों और उनके जैव उत्पादों के साथ गहरी भावनाएं जुड़ी हुई हैं और देश में मवेशियों के जैव उत्पादों के उचित उपयोग के लिए और विशेष रूप से ऐसी स्वदेशी मवेशियों की नस्लों की देखभाल करने वाली संस्थाओं के लिए बहुत बड़ा समर्थन है, जिन्हें मालिकों द्वारा उनके उपयोग के बाद अनुपयोगी होने पर छोड़ दिया जाता है। ऐसे कुछ मामले हैं जहां बायोगैस खाद के उपयोग ने बायोगैस संयंत्रों की स्थापना के लाभ को दोगुना कर दिया है।

दूध न देने वाले जानवरों को पालने में आर्थिक बाधाएं, गांवों में पशुधन उप-उत्पादों का आर्थिक रूप से उपयोग करने के लिए कुशल जन-शक्ति का अभाव, प्रसंस्करण/रूपांतरण प्रौद्योगिकियों की कमी, जैविक खाद पर सीमित वित्तीय सहायता/सब्सिडी और जैव उर्वरक और मवेशियों से तैयार अन्य उत्पादों के लिए अपर्याप्त विपणन नेटवर्क तथा बाजार जैसे पशुधन की व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए कई चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है।

मृदा कार्बनिक पदार्थ, मृदा की उर्वरता, स्थिरता और उत्पादकता में सुधार के लिए हमारी मृदा में विशेष रूप से गाय के गोबर का उपयोग बढ़ाने की महती आवश्यकता महसूस की जा रही है। जैव उर्वरकों को बढ़ावा देने के लिए एक स्पष्ट नीति बनाए जाने की आवश्यकता है। इसमें और गाय के गोबर के पोषक तत्वों और मूल्य में सुधार, पशु धन-उत्पादों के कई उपयोगों में नवाचार, गाय के गोबर और गौमूत्र से आर्थिक उत्पादों के विनिर्माण में निवेश करने के लिए निजी क्षेत्र को आकर्षित करना, विपणन अवसंरचना और अन्य किसी भी व्यवहार्यता संबंधी कमी को दूर करने के लिए समर्थन शामिल होना चाहिए। हमारे देश में जैविक खेती के विस्तार के लिए पशुधन के उचित उपयोग और उच्च उपलब्धता की भी आवश्यकता है। इसके अलावा, यदि उत्पादों द्वारा पशुओं में पर्याप्त आर्थिक मूल्य जोड़ा जाए तो ये पशु किसानों के लिए आर्थिक बोझ से आर्थिक संपत्ति में बदल जाएंगे और देश को आवारा पशुओं की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।